IJAER/March-April-2025/Volume-14/Issue-2 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

स्वतंत्रता के बाद बिहार में राजनीतिक नेतृत्व का उदय: प्रमुख व्यक्तियों का केस स्टडी

संतोष कुमार

शोध छात्र एवं सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,भीम राव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

प्रोफेसर (डॉ०) रेणु कुमारी.

मार्गदर्शक, विभागाध्यक्ष,इतिहास विभाग, भीम राव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सार

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद से बिहार के राजनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जिसमें विभिन्न नेताओं ने राज्य के शासन, नीतियों और सामाजिक-आर्थिक विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह अध्ययन डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा, डॉ. अनुग्रह नारायण सिन्हा, कर्पूरी ठाकुर, लालू प्रसाद यादव और नीतीश कुमार जैसे प्रमुख नेताओं के केस स्टडीज के माध्यम से स्वतंत्रता के बाद बिहार में राजनीतिक नेतृत्व के उदय की पड़ताल करता है। बिहार की राजनीतिक गतिशीलता के परिवर्तन को समझने के लिए शासन, सामाजिक न्याय, आर्थिक सुधार और राजनीतिक रणनीतियों में उनके योगदान का विश्लेषण किया गया है। उनकी नेतृत्व शैली, चुनौतियों और विरासत की जांच करके, इस शोध का उद्देश्य यह अंतर्दृष्टि प्रदान करना है कि बिहार के राजनीतिक विकास ने दशकों में इसके विकास और विकास को कैसे प्रभावित किया है। निष्कर्ष बिहार की आधुनिक राजनीतिक पहचान को आकार देने में जाति की राजनीति, शासन सुधारों और नेतृत्व रणनीतियों के परस्पर क्रिया को उजागर करते हैं।

मुख्य बिन्दु : बिहार, स्वतंत्रता, राजनीतिक नेतृत्व, उदय, प्रमुख व्यक्तिय।

परिचय

स्वतंत्रता के पश्चात् सामाजिक आंदोलन का प्रथम चरण (1947-1967)

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रमुख भूमिका रही, जिसके कारण यह पार्टी औपनिवेशिक शासन के बाद स्वाभाविक रूप से सत्ता की उत्तराधिकारी बन गई। बिहार में भी कांग्रेस का लगभग संपूर्ण राजनीतिक क्षितिज पर नियंत्रण था। संगठित विपक्ष की अनुपस्थिति और मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ने 1962 तक सत्ता पर अपना प्रभुत्व बनाए रखा।

सामाजिक और जातीय समर्थन

कांग्रेस पार्टी में ऊंची जातियों, जैसे ब्राह्मण, राजपूत, भूमिहार और कायस्थों का वर्चस्व था। हालांकि, अनुसूचित जातियों ने भी कांग्रेस का समर्थन किया क्योंकि महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने उनके अधिकारों के लिए संघर्ष किया था। संविधान में अस्पृश्यता उन्मूलन, आरक्षण, और अन्य विधिक उपायों को कांग्रेस द्वारा दलितों के लिए एक उपहार के रूप में प्रस्तुत किया गया। मुस्लिम समुदाय का भी कांग्रेस को समर्थन मिला, लेकिन पार्टी और सरकार में उनका प्रतिनिधित्व सीमित था।

भूमि सुधार और सामाजिक बदलाव

कांग्रेस सरकार ने भूमि सुधार और जमींदारी उन्मूलन की दिशा में प्रयास किए। 1952-53 में राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (NSSO) के आंकड़ों के अनुसार, बिहार में कुल भूमि का 52.36% भाग शीर्ष 10% परिवारों के पास था, जबकि 40% गरीब परिवारों के पास मात्र 1.25% भूमि थी। भूमि सुधार कानून उच्च जातियों के स्वामित्व वाली भूमि को प्रभावित कर सकते थे, जिससे कांग्रेस को राजनीतिक रूप से नुकसान हो सकता था।

लोकतंत्र और सामाजिक चेतना

हालांकि बिहार आर्थिक, शैक्षणिक और सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ था, लेकिन राजनीतिक रूप से यह एक प्रमुख राज्य बना रहा। 1970 के दशक में पिछड़ी जातियों के बीच राजनीतिक जागरूकता बढ़ी, जो 1990 के दशक में लालू प्रसाद यादव के नेतृत्व में अपने उत्कर्ष पर पहुँची। दलितों और पिछड़ी जातियों ने अपने अधिकारों की सुरक्षा के लिए संघर्ष करना शुरू किया।

कांग्रेस की गिरावट और सामाजिक परिवर्तन

1990 में बिहार में कांग्रेस की हार के साथ ही एक नए युग की शुरुआत हुई। कांग्रेस गरीबी निवारण, सामाजिक अत्याचारों के उन्मूलन, और भूमि सुधार जैसे वादों को पूरा करने में विफल रही। भागलपुर दंगों के कारण मुस्लिम समुदाय भी कांग्रेस से दूर होने लगा। इसके परिणामस्वरूप उच्च जातियों को सत्ता में पिछड़ी जातियों के साथ साझेदारी करनी पड़ी, जिससे सामाजिक-आर्थिक बदलाव की प्रक्रिया शुरू हुई।

त्रिवेणी संघ और पिछड़ी जातियों का राजनीतिक उदय

1930 और 1940 के दशकों में बिहार में कृषक वर्ग में चेतना का विकास हुआ। त्रिवेणी संघ (यादव, कोइरी, कुर्मी जातियों का गठबंधन) कांग्रेस विरोधी आंदोलन में सक्रिय रहा। 1960 के दशक में इस गठबंधन ने लोहियावादियों को समर्थन दिया, जिससे अन्य पिछड़ी जातियों को भी लामबंद करने में सहायता मिली।

जगदेव प्रसाद और पिछड़ों का सशक्तिकरण

1970 के दशक में कोइरी जाति के नेता जगदेव प्रसाद ने अन्य पिछड़ी जातियों और दलितों के बीच अपार लोकप्रियता हासिल की। वे 'बिहार के लेनिन' के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनके नेतृत्व में ऊंची जातियों के भू-स्वामियों के बीच भय और असुरक्षा की भावना बढ़ी।

बिहार आंदोलन और आपातकाल (1974)

1974 में बिहार के छात्रों ने तत्कालीन कांग्रेस सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार और अराजकता के विरुद्ध आंदोलन शुरू किया। इस आंदोलन का नेतृत्व गांधीवादी समाजवादी जयप्रकाश नारायण ने किया। यह आंदोलन केंद्र सरकार के विरोध में बदल गया। अन्य पिछड़ी जातियों ने इस आंदोलन को समर्थन दिया क्योंकि इससे कांग्रेस को हटाने और उनके सशक्तिकरण के लक्ष्य को बल मिलने की संभावना थी।

बिहार में राजनीतिक चेतना के विकास में 1947 से 1990 तक का कालखंड अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। कांग्रेस के वर्चस्व के समाप्त होने के बाद पिछड़ी जातियों और दलितों ने राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता विकसित की। यह परिवर्तन बिहार की राजनीति में स्थायी प्रभाव छोड़ने वाला सिद्ध हुआ।

स्वतंत्रता के बाद बिहार में राजनीतिक नेतृत्व का उदय: प्रमुख व्यक्तियों का केस स्टडी

स्वतंत्रता के बाद भारत के विभिन्न राज्यों में राजनीतिक व्यवस्था का पुनर्गठन हुआ। बिहार भी इससे अछूता नहीं रहा। स्वतंत्रता के समय बिहार कृषि प्रधान और सामाजिक रूप से जटिल संरचना वाला राज्य था। इस समय राज्य को कुशल नेतृत्व की आवश्यकता थी, जिसने इसे विकास की दिशा में अग्रसर किया। इस अध्ययन में बिहार के प्रमुख राजनीतिक नेताओं की भूमिका और उनके योगदान पर चर्चा की गई है।

प्रारंभिक राजनीतिक नेतृत्व (1947-1960)

डॉ. राजेंद्र प्रसाद: बिहार से देश के प्रथम राष्ट्रपति तक का सफर

डॉ. राजेंद्र प्रसाद न केवल बिहार बल्कि संपूर्ण भारत के लिए एक प्रेरणास्रोत थे। स्वतंत्रता संग्राम में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही और स्वतंत्रता के बाद वे भारत के पहले राष्ट्रपति बने। उनका प्रशासनिक अनुभव और विनम्र व्यक्तित्व बिहार के नेतृत्वकर्ताओं के लिए आदर्श रहा।

श्रीकृष्ण सिंह (श्री बाबू): बिहार के पहले मुख्यमंत्री

श्रीकृष्ण सिंह बिहार के पहले मुख्यमंत्री बने और उनके नेतृत्व में राज्य ने औद्योगिकीकरण और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की। वे आधुनिक बिहार के निर्माता माने जाते हैं, जिन्होंने भूमि सुधार और औद्योगिक विकास की दिशा में कई कार्य किए।

अनुग्रह नारायण सिंह: वित्त और प्रशासन में योगदान

अनुग्रह नारायण सिंह, जिन्हें बिहार का "आधुनिक निर्माता" कहा जाता है, ने राज्य की वित्तीय और प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत किया। वे श्रीकृष्ण सिंह के सहयोगी थे और बिहार के आर्थिक विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

1960-1980: राजनीतिक स्थिरता और बदलाव

कर्पूरी ठाकुर: पिछड़ा वर्ग उत्थान के प्रणेता

कर्पूरी ठाकुर एक समाजवादी नेता थे, जिन्होंने पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए कई नीतियां लागू कीं। उन्होंने शिक्षा और आरक्षण नीति को आगे बढ़ाया, जिससे समाज के वंचित वर्गों को मुख्यधारा में आने का अवसर मिला।

जगन्नाथ मिश्रा: शिक्षा सुधारों में भूमिका

जगन्नाथ मिश्रा बिहार के तीन बार मुख्यमंत्री रहे और उन्होंने राज्य में शिक्षा नीति को सुधारने का प्रयास किया। उनके कार्यकाल में शिक्षकों की बहाली और शिक्षा प्रणाली में सुधार पर विशेष ध्यान दिया गया।

1980-2000: मंडल राजनीति और सामाजिक न्याय

लालू प्रसाद यादव: मंडल आयोग और सामाजिक न्याय

लालू प्रसाद यादव ने 1990 के दशक में बिहार की राजनीति में सामाजिक न्याय की अवधारणा को मजबूत किया। मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू कर उन्होंने पिछड़े वर्गों को सामाजिक और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाया। उनकी राजनीति ने बिहार की सामाजिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया।

नीतीश कुमार: विकास की राजनीति की शुरुआत

नीतीश कुमार 2000 के दशक में बिहार की राजनीति में महत्वपूर्ण नेता बनकर उभरे। उन्होंने कानून-व्यवस्था को सुधारने और बुनियादी ढांचे के विकास पर जोर दिया। उनका प्रशासन बिहार को एक नए युग में ले गया।

2000 के बाद: सुशासन और आधुनिक बिहार

नीतीश कुमार: सुशासन और विकास की नई नीति

2005 में बिहार के मुख्यमंत्री बनने के बाद, नीतीश कुमार ने कानून-व्यवस्था, सड़कों, शिक्षा और स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित किया। उनके सुशासन मॉडल की सराहना की गई और बिहार में बदलाव की एक नई लहर आई।

लालू यादव बनाम नीतीश कुमार: बिहार की राजनीति का द्वंद्व

बिहार की राजनीति में लालू यादव और नीतीश कुमार के बीच प्रतिद्वंद्विता लंबे समय तक चली। जहां लालू यादव ने सामाजिक न्याय की राजनीति की, वहीं नीतीश कुमार ने विकास और प्रशासनिक सुधारों पर ध्यान दिया। इस प्रतिस्पर्धा ने बिहार की राजनीति को नई दिशा दी।

उद्देश्य

1. स्वतंत्रता के बाद सामाजिक आंदोलन के प्रथम चरण (1947-1967) पर अध्ययन करना

2. कांग्रेस के पतन और सामाजिक परिवर्तन पर अध्ययन करना

3. स्वतंत्रता के बाद बिहार में राजनीतिक नेतृत्व के उदय पर अध्ययन: प्रमुख व्यक्तियों के केस स्टडीज

अनुसंधान प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक एवं वर्णात्मक प्रकृति का है। शोध कार्य के लिए द्वितीयक स्त्रोतो का उपयोग किया गया है। इसके लिए मुख्यतः इंटरनेट से प्राप्त सामग्रियों, प्रकाशित ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाओं में छपे-विवरण, निबंध एवं लेख तथा विभिन्न शोध-ग्रंथों को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

डेटा विश्लेषण

मातृभूमि की रक्षा के लिए जान लेने वाले और जान देने वाले दोनो तरह के सेनानियों ने अंग्रेज सरकार की नाक में दम कर रखा था। इतिहासकार डी सी डीन्कर ने अपनी किताब "स्वतंत्रता संग्राम में अछूतों का योगदान" में भी तारापुर की घटना का जिक्र करते हुए विशेष रूप से संता पासी के योगदान का उल्लेख किया है। पंडित नेहरू ने भी 1942 में तारापुर की एक यात्रा पर 34 शहिदों के बलिदान का उल्लेख करते हुए कहा था "The Faces of The dead Freedom Fighters were blackened in Front of The Resident of Tarapur".

11 "अगस्त 1942 को सचिवालय गोलीकांड बिहार के इतिहास वरन् भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का एक अविस्मरणीय दिन था। पटना के जिलाधिकारी डब्ल्यू०जी, आर्थर के आदेश पर पुलिस ने गोलियाँ चलाने का आदेश दे दिया। पुलिस ने 13 या 14 राउण्ड गोलियाँ चलाई, इस गोलीकांड में सात छात्र शहीद हुए, लगभग 25 गंभीर रूप से घायल हुए। 11 अगस्त 1942 के सचिवालय गोलीकाण्ड ने बिहार में आन्दोलन को उग्र कर दिया।

सचिवालय गोलीकाण्ड में शहीद सात महान बिहारी सपूत

1. उमाकान्त प्रसाद सिंह राम मोहन राय सेमीनरी स्कुल के 12 वीं के छात्र थे। इनके पिता राजकुमार सिंह थे। वह सारण जिले के नरेन्द्रपुर ग्राम के निवासी थे।

2. रामानन्द सिंह - ये राम मोहन राय सेमीनरी स्कुल के पटना के 11 वीं कक्षा के छात्र थे। इनके पिता लक्ष्मण सिंह थे। वे पटना जिले के शहादत नगर ग्राम के निवासी थें।

3. सतीश प्रसाद झा - सतीश प्रसाद का जन्म भागलपुर जिले के खडहरा में हुआ था इनके पिता जगदीश प्रसाद झा थे वे पटना कालेजिएट स्कुल के 11 वी. कक्षा के छात्र थे। सीवान थाना में फुलेना प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा राष्ट्रीय झंडा लहराने की कोशिश में पुलिस गोली का शिकार हुए।

4. जगपति कुमार - इस महान सपूत का जन्म गया जिल के खराठी गाँव में हुआ था।

5. देवीपद चौधरी इस महान सपूत का जन्म सिलहर जिले के जमालपुर गाँव में हुआ था। वे मीलर हाई स्कुल के 9 वीं का छात्र था।

6. राजेन्द्र सिंह- इस महान सपूत का जन्म सारण जिले के बनवारी चक ग्राम में हुआ था वह पटना हाईस्कुल के 11वीं का छात्र था।

7. राम गोविन्द सिंह इस महान सपूत का जन्म पटना जिले के दशरथ ग्राम में हुआ था। वह पुनपुन हाईस्कुल का 11 वीं का छात्र था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस स्थान पर शहीदर स्मारक का निर्माण हुआ। इसका शिलान्यास स्वतंत्रता दिवस को बिहार के प्रथम राजयपाल जयराम दौलत राय के हाथों हुआ। औपचारिक अनावरण देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने 1956 ई० में किया। भारत छोड़ो आन्दोलन के क्रम में बिहार में 15000 से अधिक व्यक्ति बन्दी बनाये गए। 8783 को सजा मिली एवं 134 मारें गए।

बिहार में भारत छोड़ो आन्दोलन को सरकार द्वारा बलपूर्वक दबाने का प्रयास किया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि क्रांतिकारियों को गुप्त रूप से आन्दोलन चलाने पर बाध्य होना पड़ा।

1 नवम्बर 1942 दीपावली की रात में जयप्रकाश नारायण, रामनंदन मिश्र, योगेन्द्र शुक्ला, सूरज नारायण, सिंह इत्यादि व्यक्ति हजारीबाग जेल की दीवार फाँदकर भाग गए। सभी शैक्षिक संस्थान हड़ताल पर चले गये और राष्ट्रीय झण्डे लहराये गये। 11 अगस्त को विद्यार्थियों के एक जुलूस ने सचिवालय भवन के सामने विधायिका की इमारत पर राष्ट्रीय झंडा लहराने की कोशिश की। 30 जनवरी 1942 से 15 फरवरी 1942 तक पटना में रहकर मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने सार्वजनिक सभा को सम्बोधित किया। बिहार में कांग्रेसी आश्रम खोलने का शीलभद्र याशी का विशेष योगदान रहा। 1935 ई0 का वर्ष कांग्रेस का स्वर्ण जयंती वर्ष था जो डॉ० श्री कृष्ण सिंह की अध्यक्षता में धूमधाम से मानाया गया। जनवरी 1936 में छः वर्षों के प्रतिबंधों के बाद बिहार राजनीतिक सम्मेलन का 19 वॉ अधिवेशन पटना में अयोजित किया गया। 22 से 27 जनवरी के मध्य बिहार के 152 निर्वाचन मण्डल क्षेत्रों में चुनाव सम्पन्न हुए। कांग्रेस ने 107 से 98 जीते। 17-18 मार्च को दिल्ली में कांग्रेस बैठक के बाद बिहार में कांग्रेस मंत्रीमण्डल का गठन हुआ।

पूर्ण स्वाधीनता प्रस्ताव जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का 29-31 दिसंमर 1929 का लाहौर अधीवेशन में पूर्ण स्वाधीनता प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। बिहार कांग्रेस कार्यसमिति की 20 जनवरी 1930 को पटना में एक बैठक आयोजित की गई 26 जनवरी 1930 को सभी जगह स्वतंत्रता दिवस मनाने के निश्चित किया और मनाया गया।

12 मार्च 1930 को माहात्मा गाँधी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आन्दोलन का आरंभ नमक कानून तोड़ने के साथ शुरू हुआ। 26 जनवरी 1930 को बिहार में स्वाधीनता मनाने के उपरान्त 12 मार्च को गाँधी जी की डांडी यात्रा शुरू हुई थी। बिहार में नमक सत्याग्रह का प्रारंभ15 अप्रैल 1930 चम्पारण एवं सारण जिलों में नमकीन मिट्ठी से

नमक बनाकर किया गया। पटना में 16 अप्रैल 1930 को नरवासपिण्ड नामक स्थान दरभंगा में सत्यनारायण सिंह, मुंगेर में श्री कृष्ण सिंह ने नमक कानून को तोड़ा।

4 मई 1930 को गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके विरोध में पूरे बिहार में विरोध प्रदर्शन किया गया। मई 1930 ई0 में बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी ने विदेशी वस्त्रों एवं शराब की दुकानों के आगे धरने का प्रस्ताव किया। इसी आन्दोलन के क्रम में बिहार में चौकीदारी कर देना बन्द कर दिया गया। स्वदेशी वस्त्रों की मांग पर छपरा जिले में कैदियों ने नंगा रहने का निर्णय किया। इसे नंगी हड़ताल के नाम से जाना जाता है।

साइमन कमीशन वापस जाओं आन्दोलन 1927 ई० में ब्रिटिश संसद एवं भारतीय वायसराम लार्ड डरविन ने एक घोषणा की भारत में फैल रही नौराश्य स्थिति की समाप्ति हेतु 1928 ई० में एक कमीशन की स्थापना की घोषण की। इस कमीशन के अध्यक्ष सर जॉन साइमन थे, अतः इसे साइमन कमीशन कहा जाता है।

18 दिसंबर 1928 को साइमन कमीशन बिहार आया। हार्डिंग पार्क (पटना) के सामने बने विशेष प्लेटफार्म के सामने 30,000 राष्ट्रवादियों ने साइमन वापस जाओं के नारों से स्वागत किया गया। साइमन कमीशन विरोध के बाद लखनऊ में पंडित जवाहर लाल एवं लाहौर में लाला लाजपत राय पर लाठियाँ बरसाई गयी। लाठी की चोट से लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गयी। फलतः विद्रोह पूरे देश में फैल गया। कमीशन के विरोध में बिहार में राजेन्द्र प्रसाद ने इसकी अध्यक्षता की थी। बिहार राष्ट्रवादियों ने नारा दिया कि "जवानों सवेरा हुआ साइमन भगाने का बेरा हुआ"। विरोधी नेताओं में ब्रजकिशोर जी, रामदयालु जी एवं अनुग्रह नारायण बाबू थें। इस घटना ने बिहार के लिए नई चेनता पैदा कर दीं 1929 ई० में सर्वदलीय सम्मेलन हुआ जिसमें भारत के लिए संविधान बनाने के लिए मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति बनी जिसे नेहरू रिपोर्ट कहते है। पटना में दानापुर रोड बना राष्ट्रीय पाठशाला भी खुली। । एक मियों खौरूद्वीन के मकान के छात्रों को पढ़ाना शुरू किया गया। बाद में यही जगह सदाकत आश्रम के रूप में बदल गया। बिहार में 6 अप्रैल 1919 को हड़ताल हुई। गया, छपरा, मुजफ्फरपुर, मुंगेर आदि स्थानों पर हड़ताल का व्यापक असर पड़ा। 11 अप्रैल 1919 को पटना में एक जनसभा का आयोजन किया जिसमें गाँधी जी की गिरफ्तारी का विरोध किया गया।

असहयोग आन्दोलन के क्रम में मजरूलहक, राजेन्द्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिंह, ब्रजकिशोर प्रसाद, मोहम्मद शफी और अन्य नेताओं ने विधायिका के चुनाव से अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली। छात्रों को वैकल्पिक शिक्षा पदान करने के लिए पटना गया रोड पर एक राष्ट्रीय महाविद्यालय के ही प्रांगण में बिहार विद्यापीठ का उद्घाघाटन 6 फरवरी 1921 को गाँधी जी द्वारा किया गया। 20 सितंबर 1921 से मजहरूल हक ने सदाकत आश्रम से ही 'मदरलैण्ड' नामक अखबार निकालना शुरू किया इसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय भावना के प्रचार-प्रसार एवं हिन्दू-मस्लिम एकता को स्थापना करना था। भारत के पत्रकार मूलतः जनता का प्रतिनिधि मानकर पत्रकारिता के क्षेत्र में आए थे। यदि सही ढंग से ऑका जाए तो स्वतंत्रता की पृष्ठभूमि पत्रों एवं पत्रकों ने ही तैयार की, जो आगे चलकर राजनेताओं एवं स्वतंत्रता संग्रामियों को पहले पत्रकार बनने के लिए प्रेरित किया। पं० बालगंगाधर तिलक, लालालाजपत राय, महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, एवं डॉ० राजेद्र प्रसाद आदि सभी पत्रकारिता से संबद्ध रहे।

कांग्रेस भी जब दो विचारों में विभाजित हुई, उस समय भी गरमदल का दिशा-निर्देश 'भारत मित्र', 'अम्युदय", प्रताप', 'केसरी' एवं रणमेरी' आदि पत्रों ने किया तथा नरमदल का 'बिहार बन्धु' 'नागरीनिरंद्', मतवाला 'हिमालय' एवं 'जागरण' ने किया।

भारतेंन्दु युग मात्र साहित्यिक युग ही नहीं, अपितु स्वतंत्रता एवं राष्ट्रीय जागरण का युगबोध कराने वाला युगद्दष्टा का युग थां। बुद्धिजीवी ऋषियों की मौन साधना, तपस्या और त्याग इतिहास की धरोहर है, जिसे मात्र साहित्य तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए बल्कि स्वतंत्रता की बलिवेदी पर आहूति करनेवालो को श्रृखंलाबद्ध समुह के रूप में भी माना जाना चाहिए।

तकनीकी रूप से पारंभिक पत्रकार स्वयं रिपोर्टर, लेखक, लिपिक, प्रूफरीडर, पैकर, प्रिंटर, संपादक एवं वितरक भी थे। क्रूरता, अन्याय, क्षोभ विरोध क्लेश, संज्ञास एवं गतिरोध उनकी दिन चर्चा थी, फिर वे अटल थे, अडिग थे, क्योंकि उनके समक्ष एक लक्ष्य था। वे देश भक्त थे। देश भक्त के समक्ष सभी अवरोधों, प्रतिरोधो एवं बाधक विचारों का खंडन उनका उद्देश्य था। ऐसी स्थिति में ब्रिटिश सरकार की दमनात्मक निनियों के समक्ष सरकारी सहायता कौन कहें, साधारण सहिष्णुता भी उपलब्ध नहीं आज सर्वत्र दृष्टव्य है। भले ही इनकी दिशा विहिनता के कारण उन आदर्शों के निकट नहीं है। उस समय न नियमित पाठक थे, न नियमित प्रेस अथवा प्रकाशन। मुद्रण के लिए दूसरे प्रेसो पर निर्भर रहना पड़ता था ताकि कुछ अंक निकल जाए। ग्राहक और पाठकों की स्थिति यह थी कि महिनों महिना पत्र मंगाते थे और पैसा मांगने पर वे वापस कर देते थें ऐसी स्थिति में प्रायः सभी पत्र-पत्रिकाओं में प्रार्थना, तगादा, चेतावनी और धमकियों के लिए कतिपय शीर्षकों में प्रकाशन होता था जैसे इसे भी पढ़ ले विज्ञापन एवं सूचना के रूप में आदि-आदि।

निःसंदेह हिन्दी का सर्वप्रथम समाचार पत्र 'उदंड मार्तड' 30 मई 1826 को कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था, जिसके संचालक पं० युगलकिशोर थे एवं सन् 1891 को गोरखपुर से मुद्रित 'विद्या धर्म दीपिका' भारत वर्ष की सर्वप्रथम निःशुल्क प्रत्रिका थी किन्तु आंग्ल महाप्रभुवों के प्रभाव में चल रहे पाठकों के अभाव में यह पत्रिका भी अनियमित होते-होते काल-कवलित हो गयी। भारत वर्ष की पत्रकारिता इसी पृष्ठभूमि में 18 वीं सदी के उतरार्द्ध में अंकुरित हुई।

ईस्ट इंडिया कंपनी के स्थापनोपरांत कई स्वतंत्र व्यापारी भी यहाँ प्रवेश पा चुके थे। ये व्यापारी भारतीय जन जीवन के साथ अपनत्व स्थापित कर स्वतंत्र पत्र-पत्रिका निकालने को तत्पर हुए। बिलियम बोल्टस प्रथम व्यापारी था जिसने 1764 में प्रथम विज्ञापन प्रसारित किया कि कंपनी शासकों की गतिविधियों से जन सामान्य को अवगत कराने के लिए वह पत्र निकालना चाहता है। कंपनी इस विज्ञापन को पढ़ते ही उसे देश निर्वासित कर इंगलैण्ड वापस भेज दिया। अंग्रेजो का पत्र, पत्रिकाओं, पत्रकारों एवं पत्रकारिता के खिलाफ दमन का श्रीगणेश यही से प्रारंभ हुआ किन्तु बोल्टस द्वारा लगाया हुआ बीज अंकुरित होकर अगस्टस हिकी के हाथों में आकर एक पत्र के रूप में प्रस्फुटित हो गया जिसका नाम पडा 'बंगाल गजट एण्ड कलकत्ता जनरल एडवर टाइजर' जिसने 'हिकीगजट' के नाम से 1780 में प्रथम पत्र के रूप में जन्म लिया। वारेन हेस्टिंग्स उस समय भारत वर्ष का गर्वनर था, जो अपने अथवा अपने मंत्रीमण्डल के प्रतिकूल एक साधारण आलोचना भी बर्दास्त नहीं कर सकता था।

हिक्की गजट इसका कटु आलोचक बन गया और फलस्वरूप 14 नवंबर 1780 को प्रथम दमनात्मक प्रहार के रूप में इस पत्रिका को जो डाक से भेजने की सुविधा प्राप्त थी, उसे छीन ली गयी। आलोचना तीव्रतर बढ़ती गयी, जिसके चलते जेम्स अगस्टस को कारगार मे डाल दिया गया और अंततः उसे देश से निर्वासित कर दिया गया इसी श्रृखंला में एक दूसरे पत्रकार विलियम हुआनी को भी निर्वासित किया गया। अन्य प्रदेशों से भी जो पत्र निकलते थे उनके लिए सरकार से लाइसेंस प्राप्त करना अनिवार्य किया गया। मद्रास से 'इफ्रेस' ने बिना लाइसेंस प्राप्त किए

'इंडिया हेराल्ड' निकालना प्रारंभ कर दिया। इसके लिए इनको कानूनी कार्रवाई के तहत गिरफ्तार किया गया और अंत में इन्हें भी निर्वासित कर इंग्लैण्ड भेज दिया गया।

प्रेस संबंधी प्रथम कानून 18 वीं० शताब्दी के अंत तक लगभग 20-25 अंग्रेजी पत्रों का प्रकाशन हो चुका था जिसमें प्रमुख थे बम्बे हेराल्ड, बॉम्बे कैरियर, बंगाल हराकारू, कलकत्ता कैरियर मार्निंग पोस्ट, ओरिएण्ट स्टार, इंडिया गजट तथा एशियाटिक मिरर आदिं पत्र-पत्रिकाओं की उत्तरोत्तर वृद्धि अंग्रेजों की दमनात्मक कार्रवाइयों को भी उसी अनुपात में बढ़ाने के लिए वाध्य करती गई। सन् 1799 में लार्ड वेलसली ने प्रेस संबंधी प्रथम कानून बनाया कि पत्र प्रकाशन के पूर्व समाचारों को सेंसर करना अनिवार्य है तथा अन्य शर्ते इस तरह लागू कर दी गई।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता के बाद बिहार में राजनीतिक नेतृत्व कई चरणों से गुजरा, जिसमें विभिन्न विचारधाराओं और नीतियों का प्रभाव देखने को मिला। प्रारंभिक दौर में श्रीकृष्ण सिंह और अनुग्रह नारायण सिंह जैसे नेताओं ने राज्य के औद्योगिक और शैक्षिक विकास की नींव रखी। इसके बाद कर्पूरी ठाकुर और जगन्नाथ मिश्रा जैसे नेताओं ने सामाजिक सुधारों और शिक्षा नीति में बदलाव किए। 1990 के दशक में लालू प्रसाद यादव के नेतृत्व में बिहार की राजनीति में सामाजिक न्याय की अवधारणा को केंद्र में रखा गया, जिससे पिछड़े और वंचित वर्गों को सशक्त होने का अवसर मिला। इसके बाद 2000 के दशक में नीतीश कुमार ने शासन व्यवस्था में सुधार कर विकास और सुशासन पर जोर दिया, जिससे राज्य की छवि में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया।

बिहार की राजनीति सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक परिवर्तनों का प्रतिबिंब रही है। विभिन्न नेताओं ने अपनी विचारधाराओं और नीतियों के आधार पर राज्य की दिशा तय की। वर्तमान और भविष्य के लिए यह आवश्यक है कि बिहार का नेतृत्व संतुलित विकास, सामाजिक समरसता, और सुशासन को प्राथमिकता देते हुए राज्य को आगे बढ़ाने का प्रयास करे। बिहार की प्रगति के लिए नेतृत्वकर्ताओं और जनता के सहयोग से एक सशक्त और समृद्ध भविष्य की नींव रखी जा सकती है।

संदर्भ

1. एम बार्न्स उद्धत, बम्बई के गवर्नर लार्ड एलफिन्स्टन की टिप्पणी से 24 जून 1857.

2. दि कलकत्ता रिव्यू 1877,-65

3. स्टेटमेंट एक्जिबिटिंग मारल एण्ड मेटीरियल प्रोग्रेस एण्ड कंडिशन ऑफ इंडिया 1871-72.

4. सर ए० क्रौफ्ट शिक्षा निदेशक, रिव्यू ऑफ एजूकेशन एण्ड इंडिया इन 1886 पृ० 4

5. कलकत्ता रिव्यू जिल्द 65, 1877.

6. दि फ्रेंड ऑफ इंडिया 20 दिसम्बर, 1840

7. बहादुर, मिश्रा विजय कुमार, (2007-08), बिहार : एक परिचय, 1. दास विषेष्वर, सिंह राकेष बहादुर, मिश्रा विजय कुमार, जेनरल बुक एजेन्सी, पटना।

8. अहमद इम्तयाज, अहसन कमर (2016), बिहार: एक परिचय, नेषनल पब्लिकेषन्स, पटना।

9. प्रसाद रमेष, (2016), बिहार इतिहास कला एवं संस्कृति, पार्वती प्रकाषन, पटना।

10. चन्द्र बिपिन, (2005), भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेषालय, दिल्ली विष्वविद्यालय ।

11. ग्रोवर बी० एल०, यषपाल, (2005), आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन, एस० चन्द एण्ड कम्पनी लि०, नई दिल्ली।

12. थॉमस, केवी (2014) लेफ्ट विंग एक्सट्रिमिज्म एंड हयूमन राइट्स, नई दिल्ली सेज पब्लिशर्स

13. मिश्रा, वंदिता, (2011) दि लॉन्ग रोड टू नूतन बिहार, सेमिनार मैगेजिन, इश्यू ऑन 620.